रात्रि क्लास 13/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा और वरसा याद है?

भारत का उत्थान और पतन। तुम बच्चे हो उत्थान तरफ। तुम्हारी बुद्धि में सिवाय विश्व की बादशाही और कुछ सूझता नहीं होगा। एम आबजेक्ट ही है विश्व की बादशाही पाना। और सभी हैं पतन तरफ। तुम्हारी बुद्धि में नई दुनिया ही बसती है। बाप रोज लिखते हैं पदमा–पदमभाग्यशाली बच्चों। तुम हेविन के मालिक बन रहे हो। आम पब्लिक का है उस दुनिया तरफ। तुम्हारा है नई दुनिया तरफ। तो बच्चों का पुरुषार्थ ही है हम नये विश्व का फिर से मालिक बनने लिये। जहाँ धन की कमी नहीं। पुरुषार्थ कर हम इनके विजय माला में पिरोवे। विश्व का तख्त नशीन बनें। कितना रात दिन का फर्क है। तुम दिन तरफ बाकी सारी दुनिया है रात तरफ। तुम जानते हो हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। अभी पुराने छी छी राज्य में है। विषय सागर में है ना दुनिया। तुम निकल पड़े हो। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम बहुत दूर चले गये हो। बागवान खेवैया मिला है ना। उस पार ले जाने। वह है फूलों का बगीचा। वही तुमको याद है। अभी बाकी थोड़ा टाइम है। इस ही लाइफ में हमको मंजिल पर पहुँचना है। 21 जन्म सुखधाम की बादशाही। अभी स्वर्ग ही तुमको याद है। याद भी यही रखना है। भल शरीर निर्वाह लिए भी करना है। 8 वर्ष कोई बड़ी बात थोड़े ही है। सारी दुनिया खत्म हो जानी है। नई दुनिया के लिए हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह सिवाय तुम ब्राह्मण के और कोई की बुद्धि में नहीं होगा। ब्राह्मणों की है चोटी फिर देवता बनते हो। फिर वैश्य, शूद्र। अभी शूद्रों का अन्त तुम ब्राह्मणों का शुरू है। नई दुनिया कहा जाये तो यह है चोटी ब्राह्मणों की। पहले ब्राह्मण फिर देवता बनते हैं। बाप ब्राह्मण बनाकर फिर हमको देवता बनाते हैं। 84 का राज़ भी अच्छा समझाया है। यह चक्र है। तुम हो ब्राह्म बाबा ऊपर में है। तुमको ऐसे फिराते हैं। तुम जानते हो हम सो ब्राह्मण हैं। फिर हम सो देवता फिर हम सो क्षत्री हम सो वैश्य फिर हम सो शूद्र बने। यहाँ तुम बैठे हो स्वदर्शनचक्रधारी तुम हो। यह ज्ञान न शूद्रों को है न देवताओं को तो यह ज्ञान तुम ब्राह्मणों को ही है। तो तुम ऊँच ठहरे ना। सिर्फ स्मृति चाहिए अभी हम ब्राह्मण हैं फिर कल हम नई दुनिया के मालिक बनेंगे। 84 का चक्र पूरा हुआ हम जाते हैं घर। यह पुराना चोला है। तुम्हारी बुद्धि सारी दुनिया से निराली है। स्वदर्शनचक्रधारी कौन बनाते हैं। तुम्हारी कितनी ऊँच कमाई है। इतनी कमाई और कोई कर न सके। बाप ऊँच ते ऊँच भगवान पढ़ाते हैं। तो जरूर हम ऊँच ते ऊँच बनेंगे। इसमें मुँझने की दरकार नहीं। सिर्फ स्मृति लाकर याद करना है। स्वदर्शनचक्र फिराना है। धंधा आदि भले करो। सिर्फ ममत्व नहीं। लाखों को करोड़ बनाना है फालतू क्यों सभी खत्म हो जानी है। दुनिया ही पुरानी है। पुराने वस्तु बड़े ही शौक से रखते हैं। तुम जानते हो सबसे पुराना शिव का लिंग है। उनसे पुराना क्या होगा। नई दुनिया में यह ल0ना0 थे। 5000 वर्ष हुए। इनसे पुरानी चीज़ तो कोई हो न सके। ड्रामा को लाखों वर्ष कह देते। तो चीज़ें भी लाखों वर्ष की होनी चाहिए। फिर जो देखते हैं कह देते हैं लाखों वर्ष की पुरानी है। तुम जानते हो 5000 वर्ष से पुरानी चीज़ कोई है नहीं। पुराने ते पुराने क्किे रामचन्द्र के मिलेंगे। ल0ना0 के राज्य ..... भी सिक्का मिल नहीं सकता। समझा जाता है क्किों आदि का क्या दाम होगा। पाई से भी कम दाम होगा। फर्क देखो कितना है। मनुष्यों की बुद्धि में क्या रहता है। तुम्हारी बुद्धि में क्या रहता है। अभी टाइम है बहुत थोड़ा। उसमें कर्मातीत अवस्था को पाना है। तो फिर सभी कर्म इन्द्रियाँ वश हो जावेंगी। सतयुग में कोई क्रिमनल आई नहीं होती। शैतानी की बात नहीं। रावण राज्य में क्रिमिनल दृष्टि हो जाती है। वहाँ तो दृष्टि खराब हो ही नहीं सकती। सारी दुनिया से तुम्हारी पढ़ाई न्यारी है। भगवानुवाचः मैं राजयोग सिखाये राजाओं का राजा बनाता हूँ। तुमको अविनाशी राजाई मिलती है जो चलती रहेगी। फिर दान–पुण्य अनुसार पतित राजाएँ बनेंगे। बच्चों को सारी हिस्ट्री का मालूम है। तुम्हारी बुद्धि में क्या है मनुष्यों की बुद्धि में देखो क्या है। तुम जानते हो अभी चक्र फिरता है जरूर। कलियुग से फिर सतयुग होगा। अभी होती है पढ़ाई। इसका नाम रखा हुआ है पुरुषोत्तम युग। जिसको नमस्ते करते थे। कल वह हमको बनना है। कल हम इसको माथा टेकते

थे। आज कहते हो हम यह बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। ऐसी2 बातें सुमिरण करने से खुशी होगी। वहाँ तो ..... तुम खुश ही रहते हो। तो अभी हीरे जैसा जीवन तुम बना रहे हो। और मनुष्य तो कौड़ियाँ भी नहीं कमाते। सभी का पैसा मिट्टी में मिल जावेगा। इसलिए कहा जाता है वर्थ नॉट ए पैनी। तुम वर्थ पाउन्ड बनते हो। भारत पाउन्ड था ना। अभी वर्थ ए पैनी बना है। तुम कितने सॉलवेन्ट बनते हो। यह स्मृति में हो तो भी कितनी खुशी रहे। अति इन्द्रिय सुख में कड़ी बीमारियाँ आदि भी छूटती जाती है। समझते हैं पुराने रावण राज्य में कितने दुखी हैं। फिर हम अपने राज्य में जावेंगे। बाप आये हैं हमको रामराज्य में ले जाने। तुम पूरे 84 जन्म लेते हो। यही सिमरण करो। अभी तुम पढ़ाई पढ़ रहे हो। भगवान पढ़ाते हैं। भगवानुवाच एक गीता में ही है। और कोई शास्त्रों में है नहीं। तुम सुनते आये हो झूठ2 अभी बाप सच2 कहते हैं मैं तुमको पढ़ा रहा हूँ। वह सभी शास्त्र जन्म–जन्मान्तर सुनते आये हो। वही गीता भगवान ने गाई थी। उनको लाखों वर्ष कह देते। अभी तुम समझते हो भगवान तो हर 5000 वर्ष बाद हमको पढ़ाते हैं। वर्ल्ड ऑलमाइटी अथार्टी पढ़ाते हैं। तुम भी बनते हो। यह सारी दुनिया के मालिक थे। अभी तो देखो टुकड़े लिए, पानी लिए, अनाज लिए लड़ते रहते हैं। अगल2 टुकड़े हो जाने से दुश्मन भी बन गये हैं। लड़ाई लगनी भी है। रक्त की नदियाँ भी बहनी है। पिछाड़ी में लड़ाई इन्हों की लगनी ही है। दोनों को हथ्शिरा मिलते रहते हैं। वह तो अपना धंधा करते रहते हैं। इनसे आखरीन में क्या होगा सो तुम जानते हो। कोई लड़ाई लगनी न है। भगवान पढ़ाते हैं तो पढ़ना चाहिए ना। शैतान से तो नहीं पढ़ना चाहिए। भगवान और शैतान के पढ़ाने में कितना फर्क है। अच्छा फिर भी बाप कहते हैं मन्मनाभव। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।